ABSTRACT

भारतीय संविधान में एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर : एक विश्लेषण

डॉ. अमरजीत सिंह
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शास.कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

सारांश

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भारत रत्न बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर एक महान विचारक, उत्कृष्ट वक्ता अदभुत विद्वता एवं ज्ञान के भण्डार, विधि विशेषज्ञ, उच्च कोटि के अर्थशास्त्री, दलितों के मसीहा, भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माता एवं करोड़ो भारतवासियों के लिये सम्मान के पात्र एवं प्रातः स्मरणीय है, उन्होंने अपना पूरा जीवन जातिवाद, असमानता, अन्याय, पूंजीवाद, ब्राम्हणवाद, पुरोहितवाद और पोषण के विरूध्द संघर्ष में समर्पित कर दिया, उन्हें दलितों का मसीहा एवं भारतीय संविधान के जनक के रूप में याद किया जाता है। डॉक्टर अम्बेडकर को उनकी अदम्य इच्छाशक्ति, अद्भुत ज्ञान कोशल, अंग्रेजी भाषा पर अदभुत नियंत्रण, किसी विचार या विषय को व्याख्यायित, वर्णित एवं विश्लेषित करने में उनकी पारंगतता, अटूट देश प्रेम एवं उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि के कारण ही तमाम वैचारिक मतभेदों के बावजूद महात्मा गांधी की अनुशंसा पर संविधान सभा में स्थान देते हुये, का उन्हें अध्यख बनाया गया, उन्होंने अपनी मेहनत, निष्ठा, समर्पण एवं विद्वता से अपने ऊपर किये गये विश्वास को सही सिध्द किया। इस शोध पत्र में हम जानने का प्रयास करेंगे कि क्यों अम्बेडकर जी को आधुनिक मनु एवं बीसवीं सदी का स्मृतिकार कहा जाता है।

मुख्य शब्द- दलितों के मसीहा, संविधान-दिवस, संविधान सभा, प्रारूप-समिति

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्